विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, श्रावण पूर्णिमा, 21 अगस्त, 2013 वर्ष 43 अंक 2

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

तेसं सम्पन्नसीलानं, अप्पमादविहारिनं।
सम्मदञ्ञा विमुत्तानं, मारो मग्गं न विन्दति॥
धम्मपद- ५७, पुप्फवग्गो.

जो शीलसंपन्न हैं, प्रमादरहित होकर विहार करते हैं, यथार्थ ज्ञान द्वारा मुक्त हो चुके हैं, उनके मार्ग को मार नहीं प्राप्त कर पाता।

धर्म-संदेश

अगस्त में छपा **'महाभारत'** का लेख मेरे निजी सचिव ने लिखा। क्योंकि यह विपश्यना विशोधन विन्यास के शोधों के अनुसार था इसलिए इसमें मेरा नाम देने में कोई दोष नहीं देखा। यह भूल अवश्य हुई कि यह लेख पत्रिका में छपने लायक नहीं था। **अच्छाइयों को अच्छाई के रूप में स्वीकार करें और बुराई को बुराई के रूप में देख कर, उनसे दूर रहें। यही शुद्ध धर्म का संदेश है।**

अगस्त की छपी हुई पत्रिका साधकों को भेज दी गयी है परंतु लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए **इंटरनेट** से इस लेख को हटवा कर निम्न पुराना लेख डलवा दिया है।

सप्रेम साशिष,
सत्यनारायण गोयन्का

विश्वशांति के लिए आंतरिक शांति आवश्यक

(सहस्राब्दि विश्वशांति शिखर-सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्काजी का प्रवचन)

अगस्त २००० के अंत में पूज्य गुरुदेव ने उपरोक्त शिखर सम्मेलन में भाग लिया, जिसमें विश्व के १००० से अधिक धार्मिक और आध्यात्मिक नेता यू. एन. ओ. के प्रधान सचिव श्री कोफी अन्नान की अध्यक्षता में एकत्र हुए थे। इस सम्मेलन का लक्ष्य सहिष्णुता बढ़ाना, विश्वशांति को प्रोत्साहन देना और विभिन्न सांप्रदायिक नेताओं द्वारा सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में आपसी वार्तालाप को बढ़ावा देना था। लेकिन विभिन्न नेताओं के दृष्टिकोण भिन्न होने के कारण मत-भेद उभरने की ही संभावना प्रबल थी। ऐसे में पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रस्तुतीकरण में इस बात पर जोर दिया कि जो बातें सभी आध्यात्मिक मार्गों में समान हैं उस सर्वव्यापी धर्म याने कुदरत के कानून को महत्त्व देना चाहिए। उनकी बातों का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया गया।

उन्होंने कहा, "मित्रो, आध्यात्मिक एवं धार्मिक दुनिया के नेताओ! आज हम सबको मिल कर मानवता की सेवा करने का एक उत्तम अवसर उपलब्ध हुआ है। धर्म एकता लाए तो ही धर्म है अन्यथा यदि फूट डालता हो तो वह धर्म नहीं है।

आज यहां धर्म परिवर्तन के पक्ष और विपक्ष में बहुत चर्चा हुई। मैं परिवर्तन के विरोध में नहीं, बल्कि उसके पक्ष में हूं – परंतु परिवर्तन एक संप्रदाय से दूसरे संप्रदाय में नहीं, बल्कि परिवर्तन दुःख से सुख में, बंधन से मुक्ति में, क्रूरता से करुणा में होना चाहिए। आज ऐसे ही परिवर्तन की आवश्यकता है और इसी के लिए इस सम्मेलन में प्रयास करना है।

पुरातन भारत ने विश्व की समग्र मानवता को शांति और सामंजस्य का संदेश दिया। पर केवल इतना ही नहीं, बल्कि शांति-सामंजस्य प्राप्त करने का तरीका भी दिया, विधि भी दी। मुझे ऐसा लगता है कि मानव समाज में यदि सचमुच शांति स्थापित करनी है तो हमें हर एक व्यक्ति को महत्त्व देना होगा। यदि प्रत्येक व्यक्ति के मन में शांति नहीं है, तो विश्व में वास्तविक शांति कैसे होगी? यदि मेरा मन व्याकुल है, हमेशा क्रोध, वैर, दुर्भावना और द्वेष से भरा रहता है, तो मैं विश्व को शांति कैसे प्रदान कर सकता हूं? ऐसा कर ही नहीं सकता क्योंकि स्वयं मुझमें शांति नहीं है। इसलिए संतों और प्रबुद्धों ने कहा, "शांति अपने भीतर खोजो"। स्वयं अपने भीतर निरीक्षण करके देखना है कि क्या सचमुच मुझमें शांति है। विश्व के सभी संतों, सत्पुरुषों और मुनियों ने यही सलाह दी – "अपने आप को जानो" माने केवल बुद्धि के स्तर पर नहीं, भावावेश में आकर या श्रद्धा के मारे स्वीकार मत कर लेना, बल्कि जब अपनी अनुभूति के स्तर पर अपने बारे में सच्चाई को जानेंगे, तब जीवन की समस्याओं का स्वतः समाधान होता चला जायगा।

ऐसा होने पर व्यक्ति सर्वव्यापी नियामता को, कुदरत के कानून को या यूं कहें ईश्वर के कानून को समझने लगता है। यह कानून सब पर लागू होता है। जब मैं क्रोध, वैर, दुर्भावना, द्वेष पैदा करता हूं तो उसका सबसे पहला शिकार मैं स्वयं होता हूं। जो वैर या द्वेष भीतर जगाया उसका पहला शिकार मैं होता हूं। मैं पहले अपनी हानि करता हूं और उसके बाद ही औरों की हानि करता हूं। यह कुदरत का कानून है। यदि मैं अपने भीतर निरीक्षण करूं तो देखूंगा कि जैसे ही मन में कोई मैल जागता है, शरीर में उसकी प्रतिक्रिया अनुभूत होने लगती है। शरीर गरम हो जाता है, जलने लगता है, धड़कन बढ़ जाती है, तनाव मालूम होता है। मैं व्याकुल हो जाता हूं। भीतर मैल जगाकर जब मैं व्याकुल होता हूं

तो अपनी व्याकुलता केवल अपने तक ही सीमित नहीं रखता, उसे औरों को भी बांटता हूं। अपने आस-पास के वातावरण को इतना तनावपूर्ण बना देता हूं कि जो मेरे संपर्क में आता है वही व्याकुल हो जाता है। मैं चाहे कितनी ही सुख-शांति की बातें करूं, मेरे भीतर क्या हो रहा है, यह शब्दों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। और यदि मेरा मन निर्मल है तो कुदरत का दूसरा कानून अपना काम करने लगता है। जैसे ही मेरा मन निर्मल हुआ कि यह कुदरत या ईश्वर मुझे पुरस्कार देने लगता है। मुझे शांति का अनुभव होता है। इसे मैं अपने भीतर स्वयं देख सकता हूं।

कोई चाहे किसी भी संप्रदाय का, परम्परा का, देश का हो, जब वह कुदरत के नियम को तोड़ कर मन में मैल जगाता है, तो दु:खी होता ही है। कुदरत स्वयं दंड देती है। कुदरत के नियमों को तोड़ने वाला तत्काल नारकीय यातना का अनुभव करता है। इस समय नारकीय दु:ख का बीज बो रहे हैं तो मृत्यु के पश्चात भी नारकीय दु:ख ही मिलेगा। वैसे ही, यदि मैं अपने मन को शुद्ध रखूं, मैत्री और करुणा से भरूं तो अब भी अपने भीतर स्वर्ग का सुख भोगता हूं और यह बीज मृत्यु के बाद भी स्वर्गीय सुख ही लायेगा। मैं अपने आपको चाहे हिंदू कहूं या मुस्लिम, इसाई, जैन कुछ भी कहूं, कोई फर्क नहीं पड़ता। मनुष्य मनुष्य है और मनुष्य का मानस मनुष्य का मानस है।

अत: परिवर्तन होना ही चाहिये – मन की अशुद्धता का, मन की शुद्धता में। यह परिवर्तन लोगों में आश्चर्यजनक बदलाव लायेगा। यह कोई जादू या चमत्कार नहीं, बल्कि अपने भीतर शरीर और चित्त के पारस्परिक संस्पर्श का प्रभाव है जो एक विशुद्ध विज्ञान है। कोई भी समझ सकता है कि मन किस प्रकार शरीर को प्रभावित करता है और शरीर किस प्रकार मन को प्रभावित करता है। बड़े धीरज के साथ जब इसका निरीक्षण करते जाते हैं तो कुदरत का कानून बहुत स्पष्ट होता जाता है कि जब भी हम चित्त में मैल जगाते हैं, दु:खी होते हैं और जैसे ही चित्त मैल से मुक्त होता है, शांति-सामंजस्य का सुख भोगने लगते हैं। आत्म निरीक्षण की इस विधि का अभ्यास कोई भी कर सकता है।

प्राचीन काल में भगवान बुद्ध द्वारा सिखाई गई यह विद्या विश्व भर में फैली। आज भी विभिन्न वर्गों के, परम्पराओं के, संप्रदायों के लोग आकर इस विद्या को सीखते हैं और वही लाभ प्राप्त करते हैं। वे अपने आप को हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान, इसाई कहते रहें, इन नामों से कोई फर्क नहीं पड़ता। मनुष्य मनुष्य है, फर्क इसी बात से होगा कि वे अभ्यास द्वारा वास्तव में धार्मिक बनें, मैत्री और करुणा से परिपूर्ण हो जायँ। उनके कर्म स्वयं अपने लिए भी और अन्य सब के लिए अच्छे हो जायँ। जब कोई व्यक्ति मन में शांति जगाता है तब उसके आस-पास का सारा वातावरण शांति की तरंगों से भर उठता है और जो भी उसके संपर्क में आता है वही शांति अनुभव करता है। यह मानसिक परिवर्तन ही वास्तविक परिवर्तन है, आवश्यकता इसी बात की है। अन्यथा सभी बाह्य परिवर्तन निरर्थक हैं।

मैं विश्व को भारत का एक कल्याणकारी संदेश पढ़ कर सुनाने की अनुमति चाहता हूं। २३०० वर्ष पूर्व पत्थर पर खुदे हुए एक आदर्श शासक सम्राट अशोक के ये शब्द बताते हैं कि शासन कैसे करना है! वह कहता है, "हमें केवल अपने धर्म (संप्रदाय) को सम्मान देकर, दूसरे संप्रदायों की निंदा नहीं करनी चाहिए"। आज इस संदेश का बहुत बड़ा महत्त्व है। दूसरे संप्रदाय की निंदा करके, अपने ही संप्रदाय को सर्वोत्तम सिद्ध करते हुए व्यक्ति मानवता के लिए कठिनाई पैदा करता है। फिर कहता है, "इसके बजाय नाना कारणों से दूसरे संप्रदायों का सम्मान करना चाहिए।" हर संप्रदाय का सार मैत्री, करुणा और सद्भावना है। इस सार को समझते हुए हमें हर धर्म का सम्मान करना चाहिए। छिलके हमेशा भिन्न होते है; तरह तरह के रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, अनुष्ठान और धारणायें होंगी। उन सबको लेकर झगड़ने के बजाय उनके भीतर के सार को महत्त्व देना चाहिए। अशोक के अनुसार; "ऐसा करके हम अपने धर्म को बढ़ावा देते हैं तथा औरों के धर्म की भी सेवा करते हैं। इसके विपरीत व्यवहार द्वारा हम अपने संप्रदाय की भी हानि करते हैं और दूसरों के भी..।"

यह संदेश हम सबको एक गंभीर चेतावनी देता है कि जो कोई व्यक्ति अपने संप्रदाय के प्रति अति श्रद्धा के मारे दूसरे संप्रदायों की निन्दा करते हुए यह सोचता है कि ऐसा करके मैं अपने संप्रदाय की शान बढ़ाऊंगा, वह अपने कृत्यों से अपने ही संप्रदाय की अधिक हानि करता है।

अंत में अशोक सर्वव्यापी नियामता का, धर्म का संदेश प्रस्तुत करता है, "मेल-जोल ही अच्छा है, आपसी झगड़े नहीं। औरों द्वारा घोषित सिद्धांत (शिक्षा) सुनने के लिए सभी तैयार रहें।" अस्वीकार करने और निंदा करने के बजाय, हम हर संप्रदाय (धर्म) के सार को महत्त्व दें तभी समाज में वास्तविक शांति और सामंजस्य स्थापित होगा।

सब का मंगल हो!

मंगल मृत्यु

जयपुर के विपश्यना-आचार्य श्री एस. अडवियप्पा ९० वर्ष की पकी आयु में गत ८ अगस्त, २०१३ को दिवंगत हुए। वे राजस्थान सरकार के लोकनिर्माण विभाग के मुख्य अभियंता (इंजीनियर) एवं सचिव थे। इससे अवकाश ग्रहण करने के बाद वे 'ब्रिज कारपोरेशन ऑफ राजस्थान' के अध्यक्ष चुने गए। सेवाकाल के दौरान ही उन्होंने विपश्यना का पहला शिविर किया और तब से इसी के होकर रह गये। सरकारी सेवा से निवृत्त होकर सारा जीवन विपश्यना को समर्पित कर दिया। सन १९८७ में वे विपश्यना के सहायक आचार्य नियुक्त हुए और १९९७ में पूर्ण आचार्य। शिविर संचालन के अतिरिक्त अपने अनुभवों के बल पर उन्होंने दक्षिण भारत (कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश) के लगभग सभी केंद्रों के निर्माणकार्य में सहयोग दिया और उस क्षेत्र में विपश्यना की गतिविधियों को गति प्रदान की। मुंबई में **ग्लोबल विपश्यना पगोडा** का निर्माणकार्य आरंभ हुआ तो पूर्णकालिक सेवक के रूप में पगोडा-परिसर में रहते हुए पगोडा-निर्माण के साथ धम्मपत्तन की भी खूब सेवा की। बढ़ी हुई अवस्था और स्वास्थ्य में कमजोरी के कारण पिछले कुछ वर्षों से अपने परिवार के साथ जयपुर रहने लगे थे। उनके परिवार के सभी सदस्य विपश्यी हैं। अंतिम क्षण बहुत शांतचित्त से शरीर त्याग किया। उनके पुण्यकर्मों के फलस्वरूप उन्हें शांतिलाभ प्राप्त हो!

आस्ट्रेलिया की केय जॉन्सटन १९७२ में बोधगया (भारत) के एक शिविर में भाग ले कर बहुत प्रसन्न हुई और शेष जीवन सेवा देने का काम

करती रही। आस्ट्रेलिया में केंद्रों की स्थापना होने पर और भी सक्रिय हुई। मि. किम जॉन्सटन के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करके दोनों गृही जीवन के साथ विपश्यना के काम में भी लगे रहे। दोनों सहायक आचार्य और वरिष्ठ सहायक आचार्य नियुक्त हुए और बहुतों की सेवा की। परंतु दुर्भाग्यवश कैंसरग्रस्त हो जाने के कारण केय १९९८ से कोई शिविर संचालित नहीं कर सकी। उसकी और पुत्र डैनियल की देखभाल हेतु किम को भी अपना गृही धर्म निभाने के लिए सहायक आचार्य की सेवा से मुक्त होना पड़ा। २५ जून की सुबह ११-३० बजे केय ने धर्ममय वातावरण में भारी कष्ट को भी समता से सहन कर, विपश्यना का एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बहुत शांतिपूर्वक शरीर त्याग किया। उसके अंतिम बोल थे-- "I have had a good life and am very grateful." निश्चित ही उसके पुण्य काम आये। दिवंगत को शांतिलाभ प्राप्त हो! ----

बड़ोदा की श्रीमती संतोकबेन वसनजी गाला १९९७ से सहायक आचार्या थी। पति-पत्नी दोनों धम्मसिंधु, बाड़ा के २०-दिवसीय शिविर में सम्मिलित हुए। २७ मार्च, २०१३ को शिविर आरंभ होने के दिन बिल्कुल ठीक थी। आराम से शिविर आरंभ किया। हॉल में बैठ कर त्रिशरण और आनापान लिया। सेशन पूरा होने पर निवास की ओर लौट रही थी कि कमरे में पहुँचने के पहले बड़ा हॉर्ट अटैक आया, वहीं गिर पड़ी और खुले आसमान के नीचे उसका शरीर शांत हो गया। चेहरे पर न कोई पीड़ा के भाव, न घबराहट, न चिल्लाना आदि। लगा जैसे आराम से सो गयी हो। पति को सूचना दी गयी। वे भी शांत रहे और शव लेकर घर आ गये। श्रीमती संतोकबेन ने बहुत शिविरों में सेवा दी थी। जिसने देखा-सुना उसे यही लगा कि ऐसी मृत्यु सब को मिले। निश्चित ही उसका मंगल हुआ।

पालिताना में नये केंद्र का निर्माण एवं १-दिवसीय शिविर

प्राचीन आध्यात्मिक नगर पालिताना से ९ किमी. दूर सोनागढ़ रोड पर नये विपश्यना केंद्र का निर्माण होने जा रहा है। यह भावनगर से ४१ किमी और सीहोर से १४ किमी की दूरी पर है। पूज्य गुरुदेव ने इसे **"धम्म पालि"** नाम से विभूषित किया है। आगामी **२० अक्टूबर,** दिन **रविवार** को इस भूमि पर पहला **१-दिवसीय शिविर** पुराने साधकों के लिए लगने जा रहा है। सभी साधक-साधिकाएं इसका लाभ ले सकते हैं। जो लोग इसके निर्माण-कार्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्नलिखित व्यक्तियों से फोन द्वारा संपर्क कर सकते हैं-- १. श्री अनिल शाह, ९४२७२-३२१४५, भावनगर; २. श्री राजू मेहता, ९४२६२-३०३३१, राजकोट; ३. श्री नीतेश कोठारी, ९८२१८-२०८९२, मुंबई.-- बैंक : **भावनगर विपश्यना सेंटर**, कोटक महेंद्र बैंक, अकाउंट नं. 6411183455, शाखा- वाघवाडी रोड, भावनगर. IFS CODE: KKBK0000891 (used for RTGS & NEFT transactions)

धम्म पुष्कर, विपश्यना केंद्र पर पगोडा का निर्माण

अजमेर के समीप पहाड़ी की तलहटी में बने सुंदर **'धम्म पुष्कर'** विपश्यना केंद्र में विगत चार वर्षों से विपश्यना के शिविर संचालित किये जा रहे हैं। साधना के योग्य अच्छी सुविधा और अच्छा वातावरण बन गया है। साधना का पूरा लाभ लेने के लिए यहां २९ शून्यागारों वाले एक पगोडा का निर्माणकार्य आरंभ हो चुका है। काम की रफ्तार धीमी है। इसे गति प्रदान करने के लिए इच्छुक साधक-साधिकाएं आगे आ सकते हैं। इसे ८०-जी की सुविधा प्राप्त है। साधकों को अपनी दान-पारमी पुष्ट करने का सुअवसर है। अधिक जानकारी के लिए **संपर्क** करें--
१. श्री रवि तोषणीवाल, मो.- 98290-71778, २. श्री अनिल धारीवाल, मो. 9829028275. निम्न बैंक में सीधे पैसे जमा कराने के बाद कृपया सूचित अवश्य करें। Name: **Vipassana Kendra Pushkar,** Bank : **Indian Bank,** Jaipur Road, Ajmer, Account No : 517444214, IFS Code : IDIB000A006, MICR Code : 305019001

धम्म कानन विपश्यना केंद्र पर पगोडा का निर्माण

बालाघाट के धम्म कानन में विगत कई वर्षों से शिविर नियमित रूप से आयोजित किये जा रहे हैं। साधकों को पूरा लाभ मिल रहा है। आयोजकों ने **७५ शून्यागार** वाले पगोडा का निर्माणकार्य आरंभ किया है। साधकों को अपनी दान-पारमी पुष्ट करने का सुअवसर है। जो भी साधक-साधिकाएं इसमें भाग लेना चाहें वे निम्न बैंक अकाउंट में सीधे पैसे भेज कर अपना विवरण फोन से सूचित कर सकते हैं --
धम्मारण्य विपश्यना ट्रस्ट, भारतीय स्टेट बैंक, बालाघाट,
अकाउंट नं. 10750422377, (IFS code-SBIN0000318).
Tel. (07632). 248145, Mob. 97531-44641, 94254-47996,

गोंदिया में नया विपश्यना केंद्र- धम्म गोंड

गोंदिया (महाराष्ट्र) शहर से ९ किमी. दूर ओझाटोला गांव में नये विपश्यना केंद्र का निर्माणकार्य आरंभ हो गया है। इसे पूज्य गुरुदेव ने **'धम्म गोंड'** नाम से विभूषित किया है। यह खर्रा पहाड़ी के पास निसर्गमय सुंदर रमणीय स्थान है। अधिक जानकारी और पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें-- धम्मिको चैरिटेबल ट्रस्ट, गोंदिया, द्वारा- जे.ए. वालदेव मैत्रीय भवन, सुगत चौक, बुद्धविहार के पास, श्रीनगर, गोंदिया- 441601. ईमेल- vipassanagondia@gmail.com;
Bank: **Central Bank of India**, branch- Gondia,
A/c. 3045883855. (IFS code-CBIN0280687)

ग्लोबल विपश्यना पगोडा हेतु कार्पस फंड

ग्लोबल पगोडा के निर्बाध संचालन हेतु एक कार्पस फंड एकत्र किया जा रहा है ताकि भविष्य में इसका रख-रखाव बिना किसी बाहरी दबाव के सफलतापूर्वक होता रहे और म्यंमा में सद्धर्म को सुरक्षित रखने तथा भारत वापस भेजने के लिए सयाजी ऊ बा खिन और म्यंमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का यह **अद्‌भुत पावन प्रतीक** हजारों वर्षों तक कायम रहे। इस **कार्पस फंड** का उपयोग कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं कर सकता, बल्कि सरकारी बैंक में जमा इस धन के ब्याज से पगोडा का दैनिक व्यय और रख-रखाव संबंधी कार्य पगोडा-संरक्षण के नियमानुसार होता रहेगा। दान भेजने हेतु विवरण इस प्रकार है:--

१. भारत में कोर बैंकिग के द्वारा **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन** को दान भेजने के लिए भारत की किसी भी **बैंक ऑफ इंडिया** की शाखा से पैसे भेज सकते हैं। विवरण निम्न प्रकार है--

"Global Vipassana Foundation"
'Axis Bank India', A/C. NO: 911010032397802
SWIFT CODE: AXISINBB062, IFS CODE: UTIB0000062
MICR CODE: 400211011,
BRANCH: Malad west branch, Mumbai-400064.

२. भारत के बाहर से दान भेजने वालों के लिए विवरण निम्न प्रकार है-- **(SWIFT transfer to 'Bank of India')**
SWIFT Transfer details are as follows:
"Global Vipassana Foundation"
Bank : **"J P Morgan Chase Bank"**
Address : New York, US,
A/c. No. : 0011407376, Swift: CHASUS33. ➔ ➔

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

चेक/ड्राफ्ट कृपया निम्न पते पर प्रेषित करें:--

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, रजि. ऑफिस-- ग्रीन हाऊस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई- 400023. *फोन*- **022-22665926**.

विपश्यना विशोधन विन्यास को मुंबई विश्वविद्यालय की मान्यता

मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा विपश्यना विशोधन विन्यास को पालि में एम. ए. एवं पी-एच. डी. छात्रों को मार्गदर्शन करने के केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी है। शोध द्वारा पालि में एम. ए. तथा पी-एच. डी. करने के लिए योग्य छात्र **विपश्यना विशोधन विन्यास** (वी.आर.आय.),ग्लोबल विपश्यना पगोडा, मुंबई में आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए संपर्क करें--
ईमेल: <s_sanghvi@hotmail.com>

शरद पूर्णिमा के अवसर पर पूज्य गुरुदेव एवं माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

20 अक्टूबर, 2013, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **3 बजे पूज्य गुरुजी के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है।** कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं।** बुकिंग संपर्क: फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1. Mr. D. H. Henry, Sri Lanka, To serve as Centre Teacher for Dhamma Sobha, Kosgama

सहायक आचार्य

1. Mr. Vitharanage Karunasena, Sri Lanka, To assist Centre Teacher in serving Dhamma Sobha, Kosgama

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Ms. Andrea Gerber, Germany

नव नियुक्तिया

सहायक आचार्य

१-२. श्री बी. एस. अचुथा एवं श्रीमती सरस्वती नाइक, भोपाल
३. श्री ओंकार वाकोडे, उल्हासनगर
४. श्रीमती विजया पवार, धुले
५. श्रीमती दीपा नारखेडे, जलगांव
६. कु. सुरेखा अड्डिडगा, हैदराबाद
७. श्री यलामनचली पांडुरंगा राव, हैदराबाद
८. श्री एस. कृष्णा रेड्डी, हैदराबाद
९. श्री नरेश कुमार शर्मा, रोहतक
10. Ms. Motoko Sakai, Japan
11. Mr. Himanshu Mehta, USA
12. Mr. Richard McCabe, USA
13-14. Mr. Po-Hsiu Chang & Mrs. Tung-Mei Tsai,Taiwan
15. Mr. Gustavo Them, Spain
16. Mrs. Naron Ear, Australia
17-18. Mr. Jamie and Mrs. Tamara Edwards, Australia
19. Mr. Fabio Schinazi, Belgium

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती कुँवरबेन अंबालाल गामी, कच्छ
२. श्रीमती कुसुम किशोर पटेल, कच्छ
३. श्री अमित उपाध्याय, दिल्ली
४. कु. ऊषा राममूर्ति, दिल्ली
५. श्रीमती किरन अमीन, जबलपुर
६. डॉ. गुलशनराय माकन, जबलपुर
७. कु. पुष्पा तामंग, सिक्किम
८. कु. पासंग डोमा वांगडी, दार्जीलिंग
9. Mr.Pornpoj Roger Sansuchat, Bangkok
10. Mrs Eva Dyson, Hong Kong
11. Mrs. Ikewati Soewarno, Indonesia
12. Ms. Vyvian Kau Mooi-Ping, Malaysia
13. Ms. Choo Fing-Yee, Malaysia
14. Mr Jaques Sibert, France
15. Mr. Jason Woodbury, USA
16-15. Mr Nyan Win and Mrs Nyo Nyo Aung Kyaw, USA
17. Ms. Farah Aisha Snipes, USA
18. Ms. Samantha Leigh Wechsler, USA
19. Mrs. Meenu Gupta, USA
20. Ms. Danielle Mulack, USA
21. Mrs Melissa Stiers Kretzchmer, USA
22. Mr Ryan Shelton, USA
23. Mr. John Miles, USA

दोहे धर्म के

हिंसा चोरी मद्य रत, रहे निरत व्यभिचार।
ये ही काया मैल हैं, काया शील सुधार॥
बोल झूठ कड़वे वचन, चुगली या बकवास।
वाणी को मैली करे, करे शील का नाश॥
पर-पीड़न दुःशील है, इससे बचना शील।
पर-पीड़क दुखिया रहे, सज्जन सुखी सुशील॥
दुर्लभ जीवन मनुज का, बड़े भाग्य से पाय।
प्रज्ञा शील समाधि बिन, देवे वृथा गँवाय॥
पंच शील पालन भला, सम्यक भली समाधि।
प्रज्ञा तो जाग्रत भली, दूर करे भव-व्याधि॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

आओ! लोगां बिस्व रा, धारां धरम महान।
सील समाधी पुष्ट कर, होवां प्रग्यावान॥
सील धरम रो आंगणो, ध्यान धरम री भींत।
प्रग्या तो छत धरम री, मंगळ भुवन पुनीत॥
सील धरम पालण करै, करै न कूड़ा काम।
सिर नीचो होवै नहीं, हुवै नहीं बदनाम॥
सुद्ध धरम फिर स्यूं जगै, प्रग्या सील समाधि।
जन मन रा दुखड़ा मिटै, मिटज्या ब्याधि उपाधि॥
धरम पंथ री जातरा, प्रथम पांवडो दान।
दूजो, तीजो, चोथियो, सील, समाधि ग्यान॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557**, **श्रावण पूर्णिमा, 21 अगस्त, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org

_____